Self Respect

08-09-2014

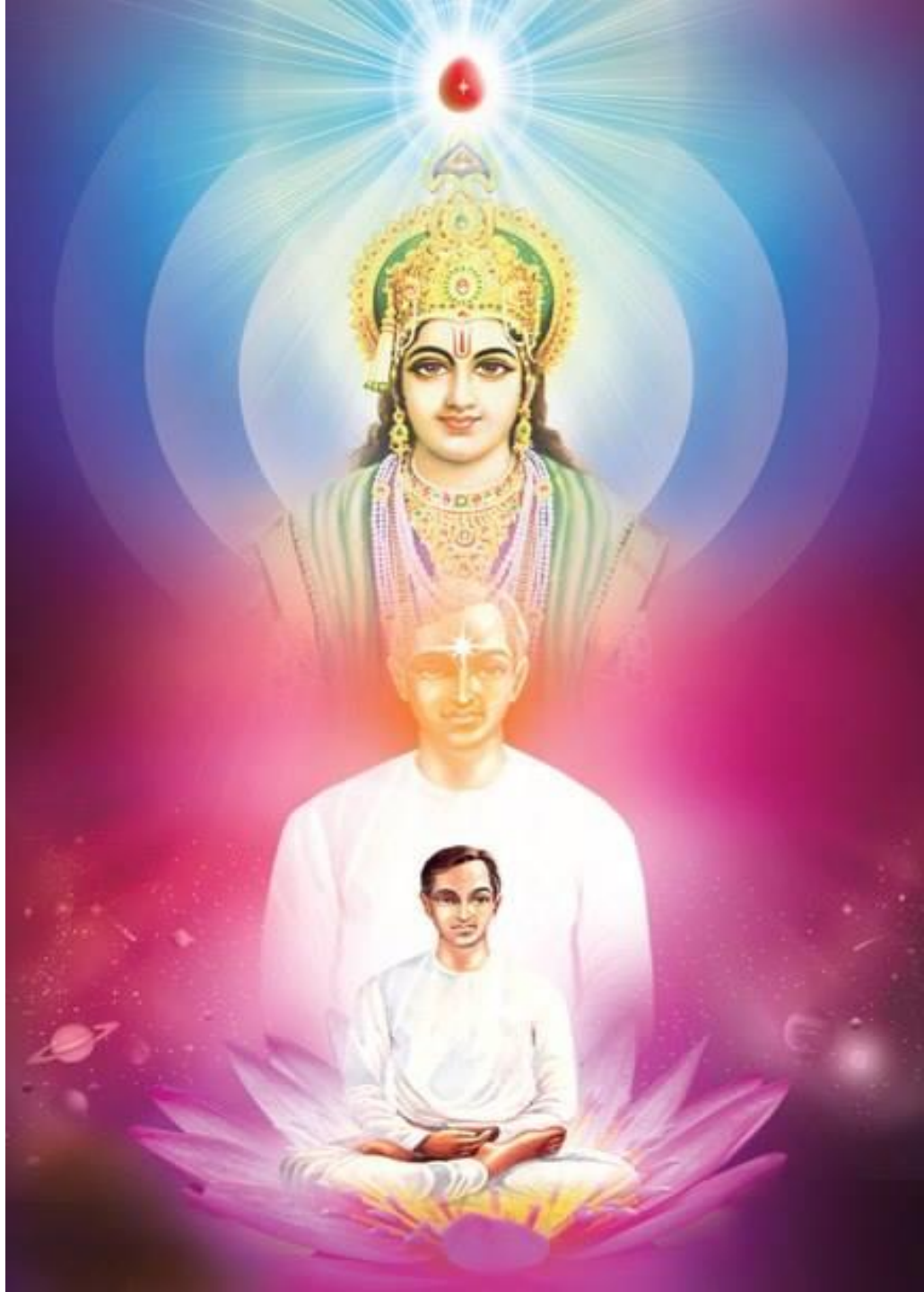

- ✓ बच्चों को सिर्फ एक की याद में नहीं बैठना है । तीन की याद में बैठना है । भल एक ही है परन्तु तुम जानते हो वह बाप भी है, शिक्षक भी है, सतगुरू भी है । हम सबको वापिस ले जाने आये हैं, यह नई बात तुम ही समझते हो । बच्चे जानते हैं वह जो भक्ति सिखाते हैं, शास्त्र सुनाते हैं, वह सब हैं मनुष्य । इनको तो मनुष्य नहीं कहेंगे ना । यह तो है निराकार, निराकार आत्माओं को बैठ पढ़ाते हैं ।

- ✓ यहाँ शास्त्र आदि की कोई बात नहीं । जानते हो बाप हमको राजयोग सिखला रहे हैं । कितना भारी टीचर है, ऊंच ते ऊँच, तो पद भी ऊंच ते ऊंच प्राप्त कराते हैं ।

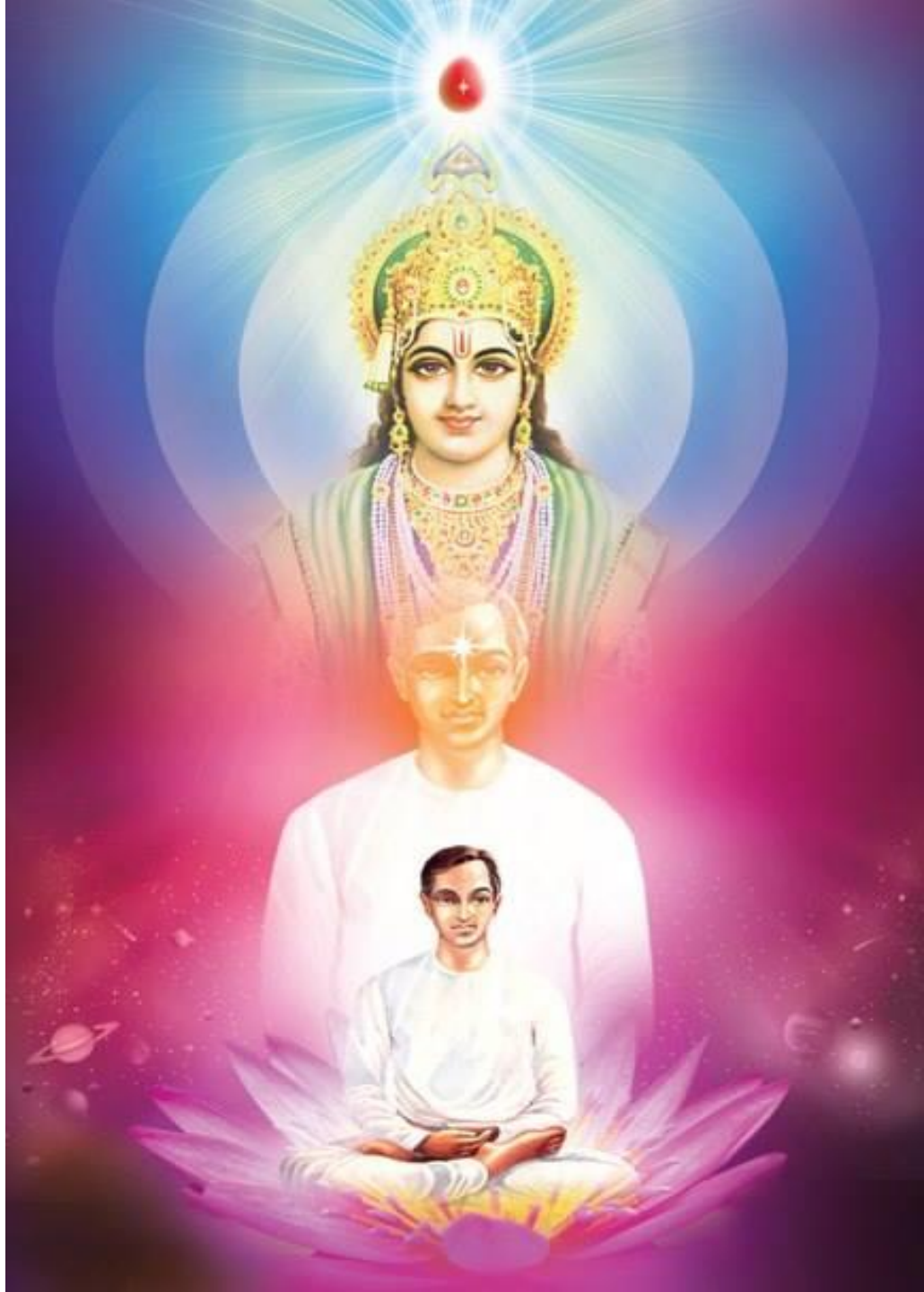

- ✓सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त का तुमको ज्ञान है । अब तुम अन्धश्रद्धा से देवताओं के आगे माथा नहीं झुकायेंगे । देवताओं के आगे मनुष्य जाकर अपने को पतित सिद्ध करते हैं । कहते हैं आप सर्वगुण सम्पन्न हो, हम पापी विकारी हैं, कोई गुण नहीं है । तुम जिनकी महिमा गाते थे, अभी तुम स्वयं बन रहे हो ।
- ✓बाबा हमारा बाप भी है । बाप को याद किया तो विकर्म विनाश होंगे । बाबा हमारा टीचर भी है तो पढ़ाई बुद्धि में आयेगी और सृष्टि चक्र का ज्ञान बुद्धि में है, जिससे तुम चक्रवर्ती राजा बनेंगे ।
- ✓बाप ही आकर समझाते हैं । सतयुग में तुम देवी-देवता विश्व के मालिक थे । वहाँ भक्ति का नाम नहीं । एक भी मंदिर नहीं था । सब देवी-देवता ही थे ।

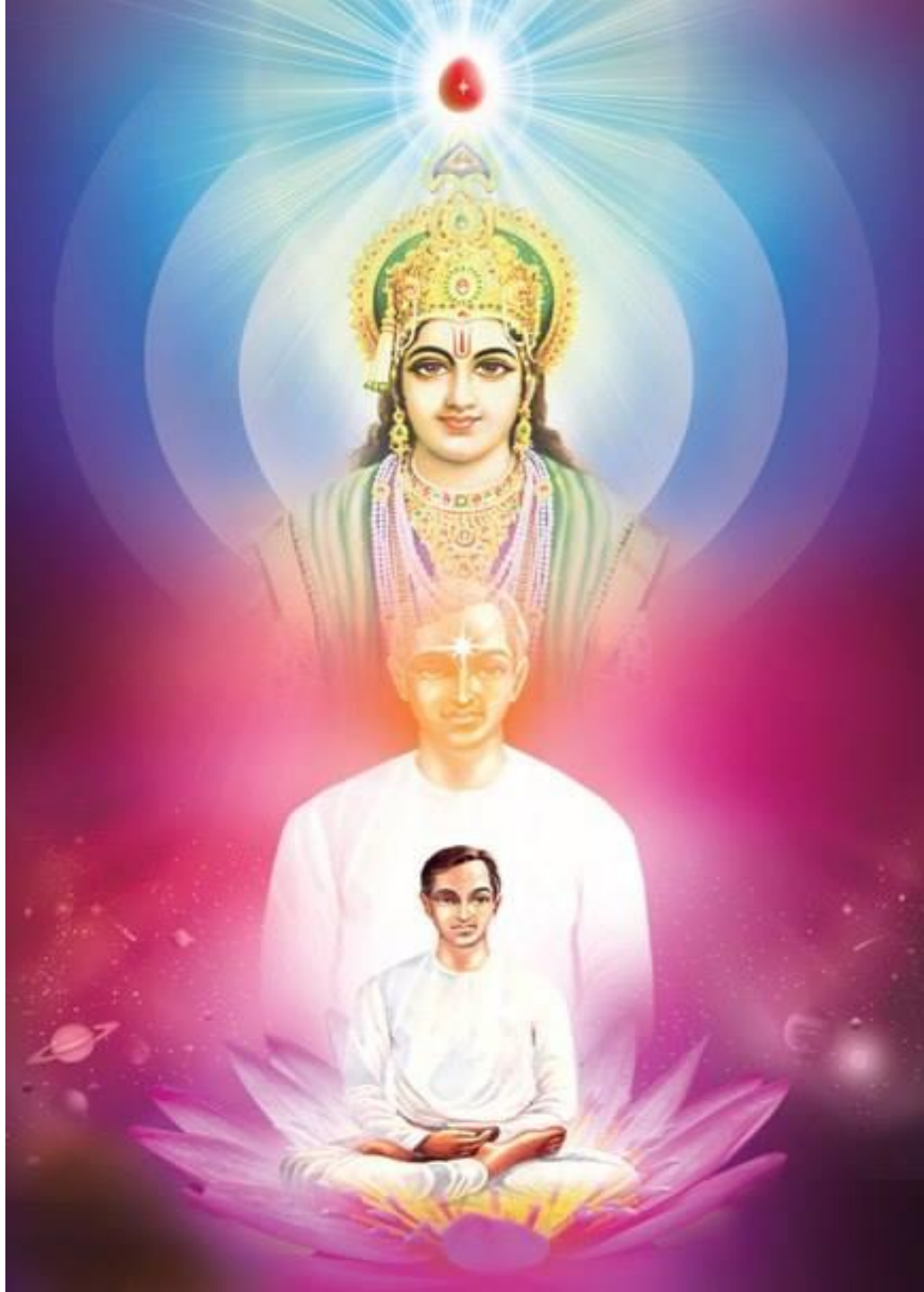

- ✓ कितनी छोटी आत्मा है, 84 जन्म भोगती है । यह चक्र फिरता ही रहता है । यह अनादि नाटक है, इनका अन्त नहीं होता ।

- ✓ यह 5 हजार वर्ष का चक्र है जो फिरता ही रहता है । अभी तुम जानते हो, बाकी उन्हों ने तो धुक्का (गपोड़ा) लगा दिया है । शास्त्रों में लिखा है कि सतयुग की आयु इतने लाखों वर्ष है ।

- ✓ तुम्हारी बुद्धि में है-बाप आते हैं देवी-दवता धर्म की स्थापना करने ।

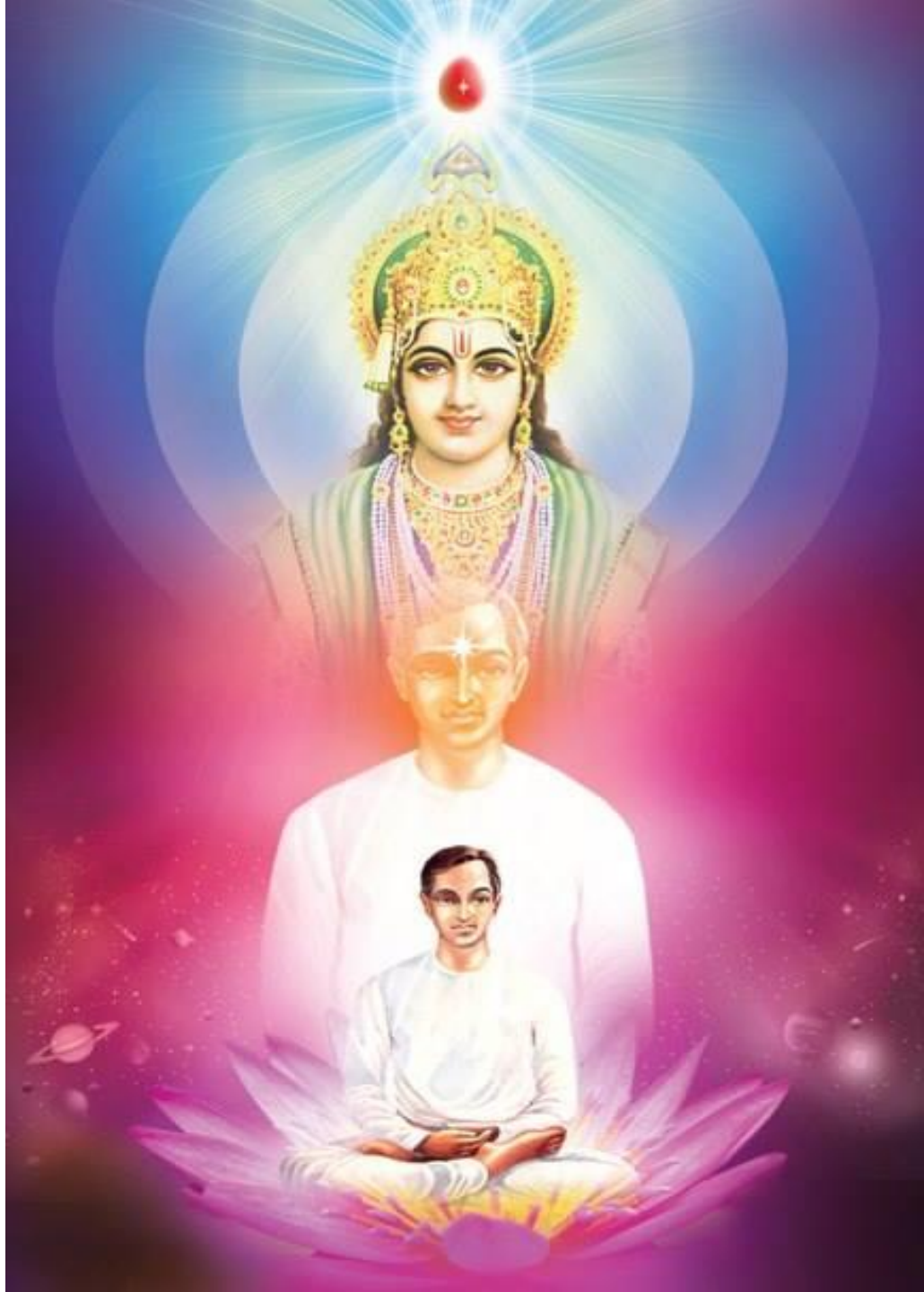

- ✓बाप कहते हैं मैं तुमको कितने पैसे देकर जाता हूँ! बेहद का बाप तो जरूर बेहद का वर्सा देंगे । इससे सुख भी मिलता है, आयु भी बड़ी होती है । बाप बच्चों को कहते है-मेरे लाडले बच्चों, आयुष्मान भव । वहाँ तुम्हारी आयु 150 वर्ष रहती है, कभी काल नहीं खा सकता है । बाप वर देते हैं, तुमको आयुष्मान बनाते हैं । तुम अमर बनेंगे । वहाँ कभी अकाले मृत्यु नहीं होगी । वहाँ तुम बहुत सुखी रहते हो इसलिए कहा जाता है सुखधाम । आयु भी बड़ी होती, धन भी बहुत मिलता है, सुखी भी बहुत रहते हो । कंगाल से सिरताज बन जाते हैं ।

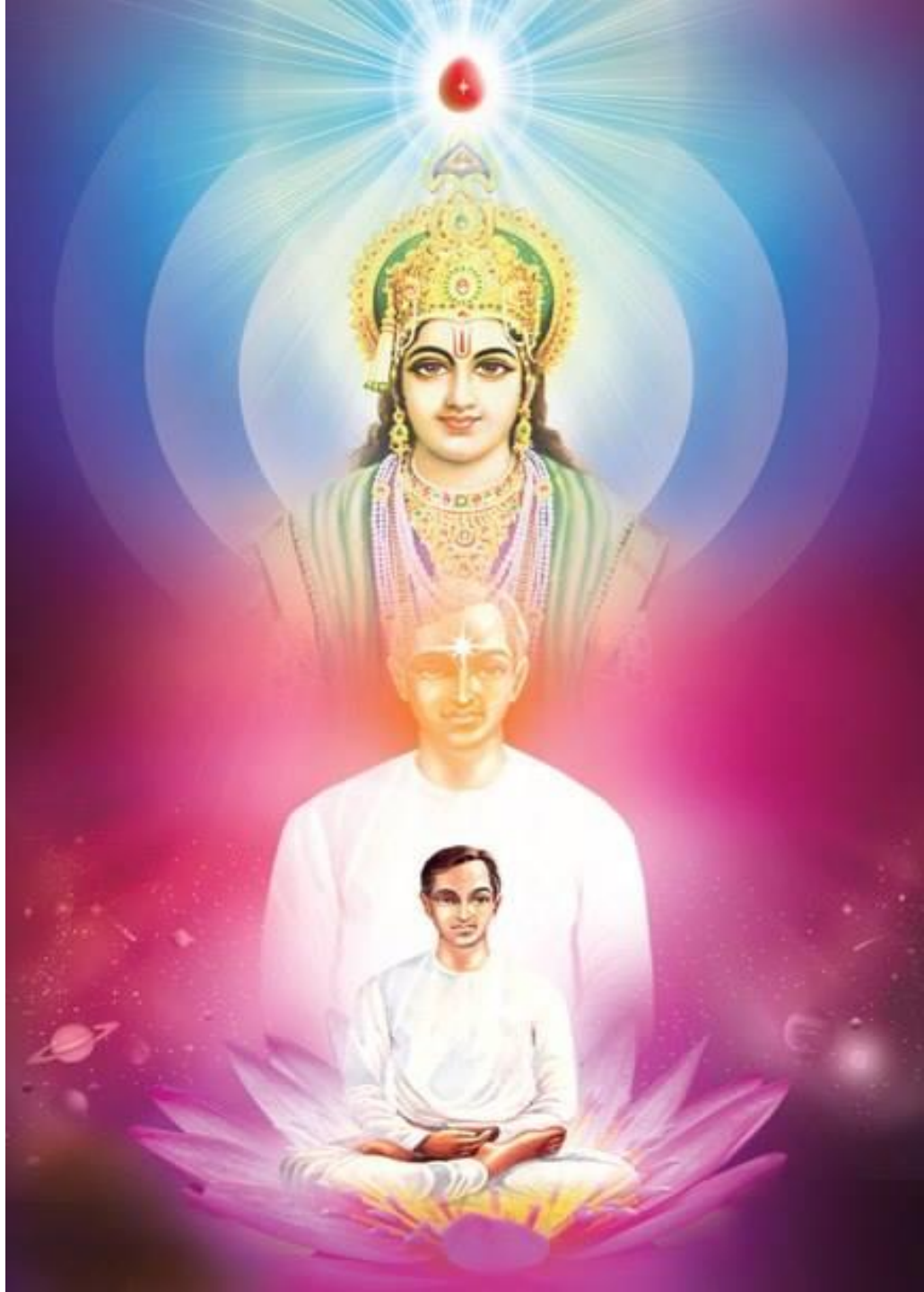

- ✓ मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमोर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते ।

- ✓ वरदान: कर्मों के हिसाब-किताब को समझकर अपनी अचल स्थिति बनाने वाले सहज योगी भव !